अर्हं

सादर प्रकाशनार्थ

साउथ कलकत्ता तेरापंथी सभा
तेरापंथ भवन
26-08-2011

आत्माराधना का महाशिविर है- पर्युषण

-साध्वी कनकश्री

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी की प्रबुद्ध शिष्या साध्वीश्री कनकश्रीजी के पावन सान्निध्य में, साउथ कलकत्ता तेरापंथी सभा के तत्वावधान में आध्यात्मिक उल्लास के माहौल में, जैन धर्म का पवित्र पर्युषण पर्व प्रारंभ हुआ। जैन धर्म का विशिष्ट आध्यात्मिक महापर्व है पर्युषण। यह संयम, तप, आत्म नियंत्रण का पर्व है। यह वर्ष में एक बार भाद्रव मास में मनाया जाता है। अन्यान्य पर्व जहां राग-रंग व मौज-मस्ती से मनाए जाते हैं वहां यह पर्व साधना-आराधना के द्वारा मनाया जाता है। वास्तव में यह आत्माराधना का महाशिविर है- ये विचार साध्वीश्री कनकश्रीजी ने पर्युषण पर्व के प्रथम दिन जनसभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

पर्युषण शब्द की अनेक संदर्भों में व्याख्या करते हुए साध्वीश्री ने कहा- पर्युषण- का अर्थ है बाहर से चित्त वृत्तियों को हटाकर अपने में अवस्थित होना। उपशम भाव का विकास करना। हमारी शक्तियों पर राग-द्वेष का, मोह का, कषाय का जो आवरण है उसे हटाना है। साध्वीश्री ने कहा- पर्युषण परमतीर्थ है, तीर्थधाम है। इस एक तीर्थ में चार धाम समाये हुए हैं। ज्ञान, दर्शन, चरित्र और तप- ये आध्यात्मिक तीर्थ है। वास्तव में ये ही हमें तारने वाले हैं। उपस्थित विशाल जनमेदिनी को आह्वान करते हुए साध्वीश्री ने कहा- इन आठ दिनों में इस परम तीर्थ की यात्रा कर स्वयं को पवित्र बनाएं और अनंत आनंद, अनंत शांति और अनंत शक्ति को प्राप्त करें।

साध्वीश्रीजी ने तेरापंथ धर्मसंघ के चतुर्थ आचार्य श्रीमद जयाचार्य के निर्वाण दिवस पर उन्हें श्रद्धाभिवंदना करते हुए कहा- श्रीमदजयाचार्य एक अतिशयधारी चमत्कारी महापुरुष थे। उनकी प्रतिभा, प्रज्ञा जागृत थी। वे स्थिरयोगी अध्यात्मयोगी थे।

साध्वी मधुलताजी ने भी अपने प्रासंगिक विचार प्रस्तुत करते हुए कहा- पर्युषण महापर्व आंतरिक परिष्कार और प्रकाश की यात्रा का पर्व है। प्रवृत्ति के शोधन की प्रक्रिया प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा- स्वाध्याय ध्यान व जप-तप के द्वारा क्षण-क्षण का उपयोग करें। साउथ कलकत्ता तेरापंथ भवन में आयोजित प्रथम दिन के कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की बहिनों के मंगल संगान से हुआ। साध्वीश्री की प्रेरणा से सैकड़ों भाई-बहिनों ने उपवास, चन्दनबाला व चक्रवर्ती के तेले का प्रत्याख्यान किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वीश्री मधुलताजी ने किया। सभा के मंत्री विनोद बैद ने व्यवस्था संबंधी जानकारी देते हुए आवश्यक सूचनाएं दी।

कोलकाता महानगर, उत्तर-दक्षिण हावड़ा तथा लिलुआ से रिसड़ा तक से आये श्रद्धालुओं की भारी उपस्थिति से तेरापंथ भवन के दोनों विशाल तल खचाखच भर गये। ऐसा लग रहा था, मानो श्रद्धा, भक्ति और आध्यात्मिक आस्था का ज्वार उमड़ रहा है।